२. अध्याय द्वितीय:

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावना

2.2. संबधित साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व

2.3. समस्या से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन

अध्याय– द्वितीय

संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावना :

किसी भी क्षेत्र में अनुसंधान की प्रक्रिया में संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अत्यन्त महत्वपूर्ण कदम है। शोधकार्य के अंतर्गत शोध संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक प्रारंभिक एवं अनिवार्य प्रक्रिया है। वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है। संबंधित साहित्य से तात्पर्य है, अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित सभी प्रकार के साहित्य– पुस्तकों, ज्ञानकोशों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से हैं। जिनके अध्ययन से अनुसंधान कर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं का निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा आदि तैयार करने एवं अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती हैं। उसके अभाव में अनुसंधान कार्य को उचित दिशा में बढ़ाया नहीं जा सकता। जब तक अनुसंधान कर्ता को ज्ञान न हो जाए कि, उस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका हैं? तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही इस दिशा में सफल हो सकता हैं। गुड़बार तथा स्केटस् (1959) कहते है– "एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधी संबंधी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहें, उस प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र में संबंधित सूचनाओं से परिचित होना आवश्यक हैं।"

2.2. संबधित साहित्य का पुनरावलोकन का महत्व :

संबंधित साहित्य के पुनरावलोकन का महत्व निम्न बिन्दुओं के द्वारा स्पष्ट हैः–

1. वह व्याख्या की जाने वाली समस्या की पूरी तस्वीर प्रकट करता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र में विस्तार के लिए यह आवश्यक है कि अनुसंधान कर्ता को यह ज्ञात हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहां तक है, वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान को आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. समस्या से संबधित साहित्य के पुनरावलोकन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
4. सत्यापन करने के लिए कुछ अनुसंधानों को नवीन दिशाओं में करने की आवश्यकता होती है।
5. किसी अनुसंधान कर्ता के पूरा वही अनुसंधान कार्य भली प्रकार किया जा चूका हो तो, हमारा प्रयास निरर्थक साबित होगा अतः संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन हमारे अनुसंधान कर्ता के प्रयास को सार्थकता प्रदान करता हैं।
6. इससे अनुसंधान कर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अनादृष्टि प्राप्त होती है।

2.3. समस्या से संबधित साहित्य का पुनरावलोकन :

शोध विषय के अध्ययन हेतु निम्न शोधकर्ताओं द्वारा किए गए समस्या पर शोध का अध्ययन कर उनके प्राप्तियों की जानकारी प्राप्त की गई है।

1. **अहिरवार पी.एन.** (2003– 2004) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय छतरपुर द्वारा 'छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन' किया गया। जिसमें इनका उद्देश्य छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्र–छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना था जिसमें बताया गया कि छात्रावासी एवं गैर छात्रावासी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अंतर नहीं पाया गया।

2. **मेश्राम अर्जुन लाल,** (1992) शासकीय शिक्षा महाविद्यालय जबलपुर, 'नवोदय विद्यालय एवं अन्य विद्यालय के छात्र–छात्रों की उपलब्धि का अध्ययन' किया गया है। नवोदय विद्यालय के छात्र–छात्राओं का शैक्षिक विकास आवासीय विद्यालय के छात्रा छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धि अधिक थी। अतः नवोदय विद्यालय के छात्र छात्राओं का शैक्षिक विकास अपेक्षाकृत अधिक अच्छा पाया गया।

3. **शोधकर्ता अग्रवाल अर्चना** (2001) 'प्राथमिक स्तर की अनामांकित एवं शाला त्यागी बालिकाओं का अध्ययन' इंडियन जनरल ऑफ एजुकेशन रिसर्च यह अध्ययन इन्होंने गोमती नगर एवं आलमगढ कि बालिकाओं पर किया जिसके अंतर्गत उन्होंने निम्न प्राप्तियाँ प्राप्त की।

    1. बालिकाओं का नामांकन प्राथमिक स्तर पर बालकों की अपेक्षा कम है।
    2. बालिकाओं का शाला त्याग देने का प्रतिशत बालकों की अपेक्षा अधिक हैं।
    3. घरेलू कार्य एवं खराब आर्थिक स्थिति के कारण कुछ बालिकाओं का विद्यालय में नामांकन ही नहीं हो पाता।
    4. 16 प्रतिशत अभिभावक बालिकाओं की शिक्षा पर धन का व्यय करना धन की बर्बादी मानते हैं।
    5. खराब शिक्षण एवं सजा का डर भी शाला त्यागने का एक कारण है।

4. **भट्ट जी.डी.** (2000) 'उत्तर प्रदेश में बालिका शिक्षा की प्रोत्साहक योजनाओं का प्रभाव' प्राथमिक शिक्षा के सार्वभौमीकरण के संदर्भ में' शोधकर्ता का उद्देश्य उत्तरप्रदेश में बालिकाओं की शिक्षा के लिए चलाई जा रही योजनाओं का प्रभाव देखना है जिसमें उन्होंने निम्न प्राप्तियॉ प्राप्त की।
    1. मध्याहन भोजन के कारण अभिभावकों का व्यवहार सकारात्मक हैं।
    2. योजना 1995 के कारण शाला में बालिकाओं का नांमाकन हुआ।
    3. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति की बालिकाओं का शिक्षा में प्रतिशत बढ़ा है।

5. **नरियन विनिता** (1996) 'आदिवासी एवं गैर आदिवासी महिलाओं की उपलब्धि अभिप्रेरक' इंडियन एजुकेशनल रिविवयु Vol. 31(2);92-98. इन्होंने शोधकार्य संथाल आदिवासी एवं गैर–आदिवासी महिलाओं में किया गया है। इन्होंने

प्राप्त किया कि उपलब्धि अभिप्रेरक का प्रभाव आदिवासी महिलाओं में कम दिखाई देता है एवं वह महिलाएं जो कुछ शिक्षित हैं। उनके बच्चे अशिक्षित महिलाओं की अपेक्षा जयादा सक्रिय होते है।

6. **उत्तर प्रदेश के दो कम साक्षरता वाले जिलो में ग्रामीण बालिकाओं एवं महिलाओं की शिक्षा व सशक्तीकरण पर महिला समाख्या के प्रभाव का अध्ययन। N.C.E.R.T. वार्षिक रिपोर्ट 2007–2008**

"उत्तरप्रदेश के दो जिलों सीतापुर एवं इलाहबाद में बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देने में महिला समाख्या के प्रभाव को आंकने का उद्देश्य है। अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि महिला समाख्या ने लडकियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में सफलता प्राप्त की है। महिला शिक्षण केन्द्र एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय दो ऐसी शिक्षा संस्थाएँ है जिनका ध्यान विशेष रूप से उन बालिकाओं जो अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़े वर्ग की है एवं जिन्होंने बीच में पढ़ाई छोड दी है या स्कूल में कभी अपना नाम नहीं लिखवाया है, पर केन्द्रित है जिसका प्रभावकारी परिणाम दिखाई देता है। इन कार्यक्रम द्वारा महिलाओं में सामाजिक बुराईयों के प्रति चेतना एवं शिक्षा के महत्व को समझने का प्रभाव दिखाई देता है।

"सीतापुर के मिशरिख खण्ड में महिला समाख्या द्वारा संचालित कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय ने नवयुवतियों की शिक्षा को कारगर ढंग से बढ़ावा दिया है।"

7. **नायर ऊषा,जोगलेकर के.सी.** (1992) ने 'बालिकाओं की प्रारंभिक शिक्षा में निरंतरता एवं अनिरंतरता (अवरोध) के तथ्यों का अध्ययन किया' प्रस्तुत शोध के उद्देयय प्रारंभिक शिक्षा से बालिकाओं के अलगाव, शालात्यागी, अनिरंतरता होने के कारणों की पहचान करना। 14–16 वर्ष की बालिकाओं के शाला अप्रवेशी होंने के कारणों की पहचान करना। बालिकाओं की शिक्षा को लोकव्यापी करने हेतुव्यूह रचना तैयार करने का आकलन तैयार किया गया। निष्कर्षतः पालकों की अच्छी आर्थिक स्थिति, बालिकाओं की शिक्षा, अभिप्रेरण एवं परिवार का शिक्षा के प्रति सहयोगात्मक दृष्टिकोण विद्यार्थियों

में निरंतरता लाता है। घरेलु कार्य व छोटे भाई–बहनों की देखभाल, कम उम्र में विवाह, गरीबी, लिंग भेद, पर्दाप्रथा आदि बालिकाओं के शालात्यागी होने के प्रमुख कारण है। लिंग भेद के कारण सामान्यतः बालिकाओं को शिक्षा व कार्यों बालक की तुलना में कम महत्व दिया जाता है तथा बालिकाओं के अप्रवेशी होने का प्रमुख कारण लिंगभेद, सामाजिक मान्यता एवं शाला का निवास से दूर होना भी है।

8. **जैन, रुपम (1996)** ने 'प्राथमिक स्तर के आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थीयों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन किया। न्यादर्श हेतु 206 विद्यार्थियों का चयन किया गया। विद्यार्थीयों की शैक्षणिक उपलब्धि के मापन हेतु स्वनिर्मित उपलब्धि परीक्षण निर्माण किया गया। निष्कर्षतः बालको की अपेक्षा बालिकाओं ने अधिक अंक प्राप्त किए। आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थीयों की शैक्षणिक उपलब्धि गैर आदिवासी क्षेत्र के विद्यार्थीयों की शैक्षणिक उपलब्धि की अपेक्षा अधिक प्राप्त हुई।

9. **शर्मा नूतन (2007–2008)** द्वारा 'कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में निवासरत् बालिकाओं तथा अन्य बालिकाओं के सामंजस्य तथा शैक्ष्णिक उपलब्धि का अध्ययन' विषय पर शोधकार्य किया। जिसका उद्देश्य था बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि तथा सांमजस्य के मध्य संबंध है या नहीं यह जानना था शोध के उपरांत पाया गया कि बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि एवं सांमजस्य के मध्य संबंध होता है। एवं बालिकाओं को प्राप्त होते वाली सुविधाओं, परिस्थितियों, स्वास्थ्य, सामाजिक एवं भावनात्मक स्थिति आदि सामजंस्य के कारकों द्वारा शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। अतः कस्तूरबा गांधी बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि अन्य बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि से अधिक पाई गई क्योंकि कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय में निवासरत् बालिकाओं को प्राप्त सुविधाओं, शैक्षिक मार्गदर्शन, उपचारात्मक शिक्षण, शिक्षकों का उत्तरदायित्व पूर्ण व्यवहार प्राप्त हुआ जबकि अन्य बालिकाओं को घर परिवार व स्वास्थ्य के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए छोटे भाई बहन की जिम्मेदारी, अभिभावकों के व्यवसाय में हाथ बटाँना आदि कार्य भी सम्पन्न करने पड़ते है।

10. **Awasthi Kashyapi and Patel R.C. (2008)- perception of Community members regarding SSA and its implementation.The objectives of the study were –**

1. **To study the consititution of differesnt committees viz. VEC (Village Education Committees) PTA, (Parent teacher association), MTA (Mother Teachers Association) .**
2. **To study the functioning of VEC, PTA, MTA and others**
3. **To study perception of member of different committees viz VEC, PTA, MTA & others regarding. SSA & its implementation.**
4. **To study the perception of members other than those of different committees regarding SSA & its implementation.**

Finding :-

1. **All schools have committees.**
2. **There are 76.80% committies according to SSA norms.**
3. **19.64% committies coopted with different community.**
4. **66.5% school members are educated.**
5. **19.58% school have no official record.**
6. **Teachers are not aware for TLM.**
7. **There are no proper facility of sanitation, water and computer.**
8. **Teacher training is depend upon organisation.**